'मुर्दहिया' में चित्रित अविस्मृत लोक पात्र

कुमार सत्यम
शोधार्थी -विश्वभारती

शोध सार : प्रस्तुत शोधालेख में लेखक तुलसीराम की आत्मकथा में उस लोक परिवेश की समीक्षा की गई है जिसमें लेखक के व्यक्तित्व की सृष्टि हुई। लोक पात्रों के बहाने भारतीय ग्रामीण परिवेश की अंत: तत्वों की संरचना को विश्लेषित किया गया है।

बीज शब्द : मुर्दहिया, सिंघा, रिंगरेजिया, हरवाही, चरवाही, बगदाद

रचनाकार जब अपने मनोभाव को अभिव्यक्त करता है तब उसकी कथावस्तु में कहीं न कहीं उसका लोक-परिवेश भी बिंबित होता है। यह लोक परिवेश, मनुष्य की पूरी संस्कृति-समाज के सांस्कृतिक विकास का स्रोत भी है। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने 'लोक' शब्द को व्याख्यायित करते हुए लिखा है -- "आधुनिक सभ्यता से दूर, अपनी तथा प्राकृतिक अवस्था में वर्तमान, तथाकथित असभ्य एवं अशिक्षित जनता को 'लोक' कहते हैं जिनका जीवन-दर्शन और रहन-सहन प्राचीन परंपराओं, विश्वासों तथा आस्थाओं द्वारा परिचालित होता है।"[1]

'मुर्दहिया' तुलसीराम की आत्मकथा का पहला खंड है जो वर्ष 2010 में प्रकाशित हुआ। इसमें तुलसीराम ने अपने जन्म से लेकर बनारस पलायन तक की जीवन संघर्षों को चित्रित किया है। कहने के लिए यह तुलसीराम की जीवनी का अंश है परंतु इसके बहाने लेखक ने अपने दलित समाज के लोक पात्रों का यथार्थ एवं प्रमाणिक दस्तावेज प्रस्तुत किया है। मुर्दहिया लेखक के गांव धरमपुर की कर्मस्थली थी। चरवाही से लेकर हरवाही तक के सारे रास्ते वहीं से गुजरते थे। इस मुर्दहिया से लेखक को आत्मीय लगाव पूरी जीवन-पर्यन्त है। वे लिखते हैं --"हमारी दलित बस्ती के अनगिनत दलित हजारों दुख-दर्द, अपने अंदर लिए मुर्दहिया में दफन हो गए थे। यदि इनमें से किसी की आत्मकथा लिखी जाती तो उसका शीर्षक 'मुर्दहिया' ही होता।"[2]

'मुर्दहिया' के दलित समाज में चाहे निम्न से निम्न लोक हो, चाहे स्थल हो चाहे पशु, वे सब लेखक की स्मृति में वर्षों बाद भी ज्यों के त्यों वर्तमान हैं। एक तरह से देखा जाय तो यह लोक परिवेश ही उनके आत्मकथा को परिपूर्ण बनाती है।

'मुर्दहिया' में लेखक सबसे पहले परिवार की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है जिसमें केवल अशिक्षा एवं अंधविश्वास का अंधकार ही फैला हुआ है। लेखक के परिवार की निम्नवर्गीय पिछड़ी पृष्ठभूमि पूरे भारतीय दलित समाज की सच्चाई है जिसमें भारत का दलित पिछड़ा वर्ग जीने के लिए विवश था। 'मुर्दहिया' में तुलसीराम ने जिस अंधकार से भरे पिछड़े निम्नवर्ग की दशा का वर्णन किया उसमें कुछ ऐसे जीवंत पात्रों को भी प्रस्तुत किया है जो पाठकों को अपनी जिंदादिली एवं विशेषता से बाँध लेते हैं। ऐसे ही जीवंत पात्रों में लेखक ने जिसे याद किया है वह है, जोगी बाबा। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि किसी भी व्यक्ति के मुँह से जो भी पहला शब्द निकलता था, वे उसी शब्द से तीन सतर वाली कविता तत्काल बनाकर एक विचित्र स्वर शैली में गाने लगते थे --

''जइसन कहत बाड़ा आँधी
वइसन मारल गइलै गाँधी
बड़ ससतिया सहबा राम
बड़स सतिया सहबा राम''[3]

वे हाजिर जवाब काव्य के एक अति कुशल कवि थे तथा हजारों शब्दों के इस विधा में तत्काल पलटने की उनमें अद्‌भुत क्षमता थी।

जोगी बाबा की तरह एक अन्य व्यक्ति का नाम था बंकिया डोम। किसी की मृत्युभोज के समय वह बिना निमंत्रण के सिंघा बजाता हुआ पहुँच जाता। वह वहाँ खाने के अलावा झोले में भी भर लेता था। अगर कोई उसे ऐसा करने से मना कर देता तो वह एक गांव से दूसरे गांव जाकर सिंघा बजाकर उस आदमी को कंजूस, मक्खीचूस, भिखमंगा आदि-आदि कहकर उसकी बेइज्जती कर देता। इसके विपरीत देनेवालों का वह सिंघा बजाकर खूब तारीफ करता।

लेखक की स्मृति में एक अविस्मरणीय पात्र के रूप में 'हिंगुहारा' है जो गांव में सालभर में एक बार हींग बेचने आता था । फिर बिना पैसा लिए वह वापस लौट जाता। सालभर बाद वह पुन: उसी महीने में वापस आकर पुराने ग्राहक के घर गाते हुए पैसे माँगता –

''हे जगलू के माई, काम घाम
बंद करा हींगक पइसा खर्र करा।''[4]

अपनी स्मृति से लेखक ने हींगुहारा के माध्यम से गांव के लोगों की ईमानदारी पर भी प्रकाश डाला है जो साल भर बाद भी पैसे चुका देते थे। ऐसे ही लेखक ने गिद्ध प्रेमी 'पग्गलबाबा' को याद किया है। वे गिद्धों के अंडे को सहलाते रहते थे।

तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा में बगदाद 'रिटर्न' जेदी चाचा को पर्याप्त आत्मीयता से चित्रित किया है। वे वंसु पांडे के हरवाहा थे तथा अन्य हरवाहे की तरह शोषित भी होते थे। वे पांडे के प्रतिरोध में एक नए किस्म का सत्याग्रह करने लगे। वे सब काम-धाम बंद कर दाढ़ी-मूँछ बढ़ाना शुरू कर दिए तथा नंगी धूप में चारपाई डालकर एक चादर ओढ़कर सोते संभवत: इनका ये रवैया ईरानी जंगल आंदोलन से प्रभावित था --"जेदी चाचा ने अपने बगदाद प्रवास के दौरान इन ईरानी जंगलियों के बारे में अवश्य कुछ सुना होगा, इसीलिए उन्होंने उनका रास्ता अपनाते हुए बंसू पांडे के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँक दिया था, जिसके चलते इन्होंने जान दे दी, किंतु क्रांतिकारी आदर्श नहीं छोड़ा। ऐसे थे भुक्खड़ क्रांतिकारी बगदाद रिटर्न, जेदी चाचा।''[5]

जेदी काका जैसे जीवंत व्यक्ति को लेखक ने पर्याप्त मानवीय संवेदना प्रदान की है। 'मुर्दहिया' में पुरुष पात्रों के साथ स्त्री के प्रति भी तुलसीराम ने अपनी पर्याप्त लेखकीय संवेदना प्रदान की है। ऐसे ही एक स्त्री पात्र में गांव की किसुनी भौजी है। उनका पति कोइलरी में काम करता है। उनका वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं --"किसुनी भौजी दो बच्चों की माँ थी। किंतु उम्र मुश्किल से बाइस साल। उसके अंदर दुखड़ा सुनाने की अद्‌भुत वर्णनात्मक शैली का समावेश था। जब वह चिट्ठी लिखवाती थी, तो लगता था कि दुखड़ा स्वयं अपना आत्मविवेचन कर रहा है। यदि वह पढ़ती, तो शायद दुखांत साहित्य में बहुत कुछ गढ़ती।''[6]

'मुर्दहिया' में आनेवाले निम्न से निम्न पात्र भी लेखक के अद्‌भुत लेखनी क्षमता द्वारा एक विशिष्ट अविस्मरणीय पात्र बनकर पाठक के हृदय में स्थान पाता है। 'मुर्दहिया' में वर्णित सारे पात्र भारत की निम्न वर्ग के प्रतिनिधि हैं जिनमें अशिक्षा, अंधविश्वास है परंतु ये सभी पात्र अपनी सहज मानवीय संवेदना लिए हुए हैं।

रचनाकार ने उनके द्वारा लिखवाई गई चिट्ठी का कुछ अंश प्रस्तुत किया है जिसमें एक स्त्री की वेदना के साथ ही साथ अकाल में ग्रस्त आम आदमी की पीड़ा को भी उजागर किया है--तु कइसे हउवा? सुनी ला की कोइलरी में आग लगि जाले। ई काम छोड़ि द। गवुवै में मजूरी कई लेहल जाई सतुवै से जिनगी चलि जाई येहर बड़ी मुसकिल में बीतता है। अकेलवै जियरा ना लागैला उपरा से खइले क बड़ा टोटा है।''[7]

उपरोक्त पंक्तियों से एक भारतीय मजदूरिन स्त्री की विरह एवं पीड़ा का अनुभव किया जा सकता है। किसुनी भौजी की तरह लेखक की स्मृति में 'नटिनिया' को भी याद किया है। वह सुंदर होने के साथ ही कुशल नर्तकी थी। उसका अंग-प्रत्यंग नृत्यकला के कल-पुर्जे की तरह लगते थे। वह पूर्णत: अनपढ़ थी किंतु राह में आते-जाते लेखक से जब तब अंग्रेजी पढ़ाने का आग्रह करने लगती --"हमहूँ के रिंगरेजिया पढ़ाव रे बाबू।''[8]

लेखक उसे अंग्रेजी के कुछ अक्षर सिखाने की असफल कोशिश करने लगे परंतु वह ए बी सी डी भले ही न सीख पाई हो परंतु 'पिपरा पे गिधवा बइठल हउवै' का अंग्रेजी

अनुवाद 'वल्चर्स आर सिटिंग आन पीपल ट्री' अवश्य रट गई। उसके द्वारा दुहराए जाने वाले इस वाक्य ने तुलसीराम को अपने गांव का सबसे बड़ा आवारा बना दिया था और पूरे गांव नटिनिया एवं इनको लेकर कई अफवाहें भी उड़ने लगीं। इसी प्रकार लेखक ने दलित सवर्ण संबंधों पर भी प्रकाश डाला है। जाहिर है कि ये सवर्ण जाति दलितों पर आधिपत्य जमाए रखते फिर भी वर्षों से साथ रहते हुए दलित सवर्णों के बीच मानवीय सद्भाव भी अवश्य विकसित हुआ।

स्कूली जीवन में पर्याप्त भेदभाव के बाद अध्यापक तुलसीराम की प्रतिभा की सराहना करते। स्कूल के हेडमास्टर परशुराम सिंह इनकी उत्साहवर्द्धन करते। लेखक ने विद्यार्थी जीवन की हर छोटी-छोटी घटना रसात्मकता के साथ सुनाया है। 'मुर्दहिया' के प्रति अपनी असीम लगाव को प्रकट करते हुए वे लिखते हैं --"जमाना चाहे जो भी हो, मेरे जैसा कोई अदना जब भी पैदा होता है, वह अपने इर्द-गिर्द घूमते लोकजीवन का हिस्सा बन ही जाता है। यही कारण था कि लोकजीवन हमेशा मेरा पीछा करता रहा। परिणामस्वरूप मेरे घर से भागने के बाद जब 'मुर्दहिया' का प्रथम खंड समाप्त हो जाता है, तो गांव के हर किसी के मुख से निकले पहले शब्द से तुकबंदी बनाकर गानेवाला जोगीबाबा लक्कड़ ध्वनि पर नृत्यकला बिखेरती नटिनिया, गिद्ध-प्रेमी पग्गल बाबा तथा सिंघा बजाता बंकिया डोम जैसे जिंदा लोक पात्र हमेशा के लिए गायब होकर मुझे दुख पहुँचाते हैं।"[9]

'मुर्दहिया' में आनेवाले निम्न से निम्न पात्र भी लेखक के अद्भुत लेखनी क्षमता द्वारा एक विशिष्ट अविस्मरणीय पात्र बनकर पाठक के हृदय में स्थान पाता है। 'मुर्दहिया' में वर्णित सारे पात्र भारत की निम्न वर्ग के प्रतिनिधि हैं जिनमें अशिक्षा, अंधविश्वास है परंतु ये सभी पात्र अपनी सहज मानवीय संवेदना लिए हुए हैं। अकाल एवं बेरोजगारी से ग्रस्त ये सभी पात्र जीवन संघर्ष में जुटे हुए हैं। उनकी जिजीविषा कठोर जीवन संघर्ष को दिखाकर जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिए को ही प्रकट करता है। तुलसीराम की निजी जिंदगी भी विभिन्न आपदाओं के बीच ही आकार पाती रही। एक पिछड़े दलित परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने जो सफलता प्राप्त की, वह उसी संघर्षमय जीवन की पृष्ठभूमि रही है। 'मुर्दहिया' में आए हुए प्रत्येक पात्र अपनी जिजीविषा एवं सकारात्मक जीवन दृष्टि से लेखक के जीवन पर गहरा प्रभाव डालते हैं जिनको कालांतर में खोने पर वह दुःखी है।

संदर्भ :

1. उपाध्याय कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा. लि., 56 रानीमंडली बच्चा जी की कोठी, इलाहाबाद-211003, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या --21-22
2. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या --5
3. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या --31
4. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या –29
5. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या –93
6. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या –90
7. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या --90
8. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या --117
9. तुलसीराम, मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 23-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 2016, पृष्ठ संख्या –5